विज्ञान और हम

अलबर्ट आइन्स्टीन ने सेन फ्रांसिसको जाने से पूर्व एक साक्षात्कार में जब कहा था कि आम आदमी के लिए आज का जीवन इतना तीव्रगामी हो गया है कि उसे अखबार के मुख्य समाचारों पर नज़र डालने का भी समय नहीं मिलता तब उनका आशय जीवन की गति को धीमा करने से था।

'कुछ वर्ष पूर्व लोगों के पास सुकून से बैठकर विचार करने का समय होता था। यद्यपि कुछ लोग इस अवसर का लाभ नहीं उठाते थे। किन्तु आज स्थिति यह है कि चाहते हुए भी रुककर विचार करने का समय किसी के पास नहीं है। इस भागते जीवन में हम विज्ञान को साधारण रूप से समझने में भी असमर्थ हैं। विज्ञान को समझने में आम लोगों में कोई उत्सुकता नहीं दिखती। भले ही यह विरोधाभासी लगे लेकिन है सच कि विज्ञान लोगों की वास्तविकता से पहचान कराने में कम ही मददगार साबित होता है। वैज्ञानिक तकनीक का विकास इस तीव्र गति से हो रहा है कि उसे साधारण व्यक्ति समझने में असमर्थ है। ज़रूरत है कुछ थमने की ताकि साधारण व्यक्ति भी इससे नाता बना सके।

विज्ञान की प्रगति के पीछे उद्देश्य नेक है व भविष्य उज्ज्वल है। अधिकांश वैज्ञानिक खोजें व्यावहारिक उपयोग की होती हैं। इनका प्रयोग मानव जीवन में सुधार लाने या उसे नष्ट करने, दोनों उद्देश्य से किया जा सकता है। विज्ञान स्वयं इन दोनों में से किसी भी ओर जाने हेतु प्रेरित नहीं करता। विज्ञान द्वारा दी गई सौगातों का दुरुपयोग औद्योगिक घरानों व सरकारों का पेशा है। ये संस्थान ही जीवन की व्यावहारिक समस्याओं को दूर करने के लिए वैज्ञानिक निष्कर्षों का प्रयोग करते हैं। इसके परिणामस्वरूप आर्थिक प्रतिस्पर्धा, व्यापारिक ईर्ष्या, अधिक मुनाफा कमाने की होड़ व उद्योगों का पूंजीकरण शुरू होता है। धन के पीछे भागने की प्रवृत्ति लोगों में उन्माद पैदा करती है जिससे जीवन की शोभा व सौंदर्य दोनों नष्ट हो जाते हैं। बुराइयां तथा दुष्टता पैदा करने वाली इस प्रवृत्ति की धर्म भी निंदा करता है। लोगों में धन के प्रति लोभ इस समय चरम सीमा पर है। इसका महत्व कम होने पर ही धर्म व विज्ञान द्वारा विश्व की सम्पत्ति को मानवीय सुख के नए मूल्यों को प्रस्थापित कर बढ़ाया जाएगा। इस समय मानव सुख का मतलब भौतिक साज-समान की उपलब्धता ही माना जाता है। इसे नए मूल्यों द्वारा बदलना होगा। जब हम अभी के सामाजिक उथल-पुथल से ग्रस्त शहरी लोगों के जीवन में, भय व श्रद्धा उत्पन्न कर देंगे, वाणिज्य व औद्योगिक संगठनों को मानवीयता के प्रति संवेदनशील बना देंगे तथा ग्रामीण लोगों में शिक्षा व ज्ञान का प्रसार कर नागरिक प्रशासन में उनकी भागीदारी सुनिश्चित कर देंगे, तभी हम राष्ट्र के समन्वित विकास की आशा कर सकते हैं। तभी हम लोगों को शांति व सुकून दे सकते हैं जिससे वे अपनी प्रतिभा का समुचित उपयोग कर अपने घरों व आसपास के वातावरण को समृद्ध कर सकें।

इस समय मानव सुख का मतलब भौतिक साज़ोसमान की उपलब्धता ही माना जाता है। इसे नए मूल्यों द्वारा बदलना होगा। जब हम अभी के सामाजिक उथल-पुथल से ग्रस्त शहरी लोगों के जीवन में, भय व श्रद्धा उत्पन्न कर देंगे, वाणिज्य व औद्योगिक संगठनों को मानवीयता के प्रति संवेदनशील बना देंगे तथा ग्रामीण लोगों में शिक्षा व ज्ञान का प्रसार कर नागरिक प्रशासन में उनकी भागीदारी सुनिश्चित कर देंगे, तभी हम राष्ट्र के समन्वित विकास की आशा कर सकते हैं।

विज्ञान की सीमाओं को उनसे बेहतर कौन जान सकता है जिन्होंने विज्ञान को जिया है। उनके अनुसार विज्ञान का उद्देश्य शरीर की रक्षा ही नहीं अपितु आत्मा की रक्षा करना भी है। विज्ञान प्रकृति के आवरण को हटाकर हमें अनेक तथ्यों तथा

घटनाओं से परिचित कराता है। यह सोच के नए आयाम देकर हमें इस विश्व की वास्तविकता, उसके नियमों व इतिहास से भी परिचित कराता है। सर्वसाधारण को विज्ञान के उच्च तकनीकी पहलुओं से कोई सरोकार नहीं रहता। किन्तु जिन लोगों ने पर्याप्त वैज्ञानिक शिक्षा प्राप्त की है, उन्हें उनकी रुचि के विषयों या उन विषयों में हो रही प्रगति से अवगत कराया जा सकता है जिनमें उन्होंने शिक्षा पाई थी। विज्ञान को सर्वव्यापी बनाने के लिए उसका ह्रास ज़रूरी नहीं है। इस समय सार्वजनिक जीवन का सम्पूर्ण आकाश अंधकारमय है। केवल कुछ नक्षत्र अपने यश के गौरव के साथ यहां-वहां टिमटिमा रहे हैं। किन्तु उनका प्रकाश इस गुप अंधेरे में लगभग नगण्य है। आइन्स्टीन चाहते थे कि सम्पूर्ण आकाश को प्रकाशमान किया जाए ताकि इसका हरेक अवयव स्वप्रकाशित हो।

यह विचार बहुत संकुचित है कि विज्ञान का कार्य केवल संशोधन करना ही है। यदि विज्ञान का ज्ञान अच्छा है तो वह लोगों के लिए उपयोगी भी होना चाहिए। अपनी प्रयोगशाला से बाहर निकलकर विज्ञान से सरोकार रखने वाले लोगों को अपने शोध कार्य में आई कठिनाइयों तथा अपने अनुभव किए गए रोमांचक क्षणों तथा अपने शोध से हो सकने वाले सांस्कृतिक लाभों की जानकारी देना एक वैज्ञानिक के लिए सर्वथा उचित है। विश्वविद्यालय, वैज्ञानिक संगठन व सभाएं, समाचार पत्रों आदि ने इस प्रकार की जानकारी को सर्वसाधारण तक पहुंचाने के लिए अनेक सूचना माध्यम स्थापित किए हैं। किन्तु इनके प्रयासों को ऐसे कारणों द्वारा विफल कर दिया जाता है जिन पर विज्ञान का नियंत्रण नहीं है। धन की लालसा कम होने पर ही विज्ञान पनप सकता है।

भारत में यह कार्य अधिक कठिन है। यहां शिक्षा बहुत ही कम लोगों तक पहुंची है। जिन्हें शिक्षा मिली भी है वे विज्ञान के विषयों से तथा उसकी समस्याओं से कोसों दूर हैं। युवा पीढ़ी ज्ञान में वृद्धि के लिए अतिरिक्त पढ़ाई की बजाए रोज़गार के लिए चिंतित है। ऐसे लोग जिनके पास सांसारिक भोग की वस्तुएं पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं, जिन्हें फुरसत है तथा कुछ मानसिक शांति भी है, वे अपने सामाजिक स्तर के अनुरूप कार्यों में लिप्त हैं। व्यापारियों के लिए विज्ञान एक फिजूल की वस्तु है। हालांकि भारत के विश्वविद्यालय इस जड़त्व के ऊपर काबू पाने में तथा जीवन की दिशा में सुधार लाने में प्रयत्नरत हैं; किन्तु उन्हें विदेशी भाषा में उपलब्ध ज्ञान को साधारण लोगों तक फैलाने में समय लगेगा। भारत में ही नहीं, अन्य देशों में भी जब सार्वजनिक जीवन से धन कमाने की होड़ नष्ट होगी तभी लोग ज्ञान प्राप्ति की ओर बढ़ेंगे, कला व साहित्य के सौंदर्य का आनन्द लेने के लिए फुरसत निकालेंगे तथा उद्योग, वाणिज्य तथा असंतुलित विकास जैसी संकुचित सीमाओं से ऊपर उठकर उच्च आदर्शों व आकांक्षाओं को प्राप्त करने की क्षमता विकसित करेंगे। *(स्रोत फीचर्स)*

वर्ष 1999 व 2000 के स्रोत सजिल्द

150 रुपए में उपलब्ध हैं।

डाक से मंगवाने पर 25 रुपए अतिरिक्त।